फिर भी उसमें याद तो करना ही पड़ता है बाप को; क्योंकि पहले–2 ही बाप याद आते हैं। पहले–2 ही शिवजयन्ती। भले दूसरी जयन्ती यहाँ हैं; पर जैसे उसमें लिखा है ना अपने काड्र्स में कि शिवजयन्ती ही जयन्ती, उनका ही गायन है, बाकी क्या जयन्ती है! ये सिर्फ बच्चों को समझाया है कि कितने ये हॉलिडेस करते हैं देवताओं की, वो नंबरवार लिखो। बाकी यूँ तो बच्चों को तो सभी शिव ही याद आएँगे, औरों की लिख करके क्या करें! है ना है शिवबाबा की (...)। अगर ये भी सिर्फ बोल देवें, तो भी बाबा समझें कि अच्छा, फिर भी तो विचार–सागर–मंथन तो किया ना और फिर बोले भी तुम– बाबा, आप तो कहते ही हैं, दूसरे का फिर विचार ही क्यों करें कि इसके पीछे कौन–2 हैं पूज्य? नहीं, पूज्य एक ही है। उनको भी बनाने वाला पूज्य तो एक ही है ना बच्चे! तो अगर उनकी भी याद किसने दे दी– बाबा, हम तो एक को ही जानते हैं, उनकी ही जो हॉलिडे है, ये जन्म, जन्म, बस वो ही बस है। बाकी किसका जन्म वो लिखकर देवें! तो एक ही याद...रहता है और आत्मा को तो अभी अपन को, हर एक को, आत्म बुद्धि है ना, तो फिर बाप से अच्छी लगन लगती है। जैसे और किसी की लगन लगती है ना, हर एक मनुष्य की कोई–न–कोई से लगन ज़रूर लगती है, जो होनी चाहिए एक की लगन; इसलिए फिर बाकी जो हैं, उनको हम भूल जाते हैं। भले किसके भी त्यौहार मनाते आते हैं और वो त्यौहार सभी फीके हैं सिवाय एक के। जो हमको बैठ करके और विश्व का मालिक बनाते हैं और बैठकर समझते हों, समझते हैं अभी कि बरोबर ये ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है जो बाप को भी आना है। उसका भी ये पार्ट है हमको ये वर्सा देने के लिए, तो भी ऊँचे–ते–ऊँचा भगवत तो गाते ही हैं और ऊँचे–ते–ऊँचा वर्सा भी वो ही देते हैं। सबसे ऊँचा वो ही है। अगर इनका भी नाम लेवें, इनकी भी जीवन बर्थ–डे मनाते हैं, तो भी इनका बर्थ–डे निमित्त तो बाप के बनते हैं ना! तो अगर वो एक का ही नाम ले देवें, तो भी सक्सेसफुल है; क्योंकि इस समय में बच्चों का लव ही एक से है; क्योंकि फिर दूसरा न कोई। कि आत्मा को ऑर्डर्स मिलता है कि डायरेक्शन्स मिलता है, श्रीमत मिलती है– तो अभी पवित्र बन जाओ माम् एकम् याद करके, तो फिर तुम ये ऊँचे–ते–ऊँचा मनुष्य बन जाएँगे। ऊँचे–ते–ऊँचा भगवत, फिर ऊँचे–ते–ऊँचा मनुष्य। हैं तो मनुष्य, फिर भी दैवी बुद्धि है इनकी, दैवी गुण हैं; इसलिए इनको देवता कहा जाता है। गुण हैं इसमें इसलिए देवता कहते। हैं तो ये सभी मनुष्य, मनुष्य–सृष्टि है, सारी सृष्टि ये मनुष्य–सृष्टि है, और कोई है नहीं, ये धर्म है सिर्फ; क्योंकि दैवीगुण धारण करते हैं मनुष्य तो उनको देवता कहा जाता है और दैवीगुण नहीं तो फिर असुर कहा जाता है। ये अभी समझ में आता है कि बरोबर दैवीगुण हैं तो सुख भी है हर प्रकार का ये ड्रामा के प्लैन अनुसार। अभी जितना हम, हम शिवबाबा से योग रखेंगे इतना हम सुखी बनेंगे, पवित्र भी बनेंगे। इसमें है एक ही बात ये कि अपन को आत्मा घड़ी–2 समझना। कल्याण बच्चों का है ही इसमें। ये ही भूलते हैं, ये भूलने के बाद अनेक तूफान आते हैं बच्चों को। बाप तो बच्चों को कहेंगे ना; क्योंकि बच्चों की इस माया के साथ चकरी है; क्योंकि बच्चे अब मेरे बने हैं, तो मेरे बनने नहीं देती। है ना! कि इसके ऊपर बाबा ने कहा था ना, नाटिक भी है कि माया ऐसे करती है और ईश्वर ऐसे करते हैं। तो वास्तव में अभी तुम बच्चों को, जैसे कोई ड्रामा का एक्टर्स होवे और उनको अपने सारे ड्रामा का मालूम भी हो, ड्यूरेशन का भी मालूम हो और ड्रामा के मुख्य का भी मालूम हो, तो सिर्फ तुम बच्चों को ही इस ड्रामा के आदि,मध्य,अंत और प्रिन्सीपल जो एक्टर्स हैं या पार्टधारी हैं, ऐसे कहेंगे–एक्टर्स कहो या पार्ट(धारी)–तो तुम्हारी बुद्धि में अच्छा ये ज्ञान बैठा हुआ है और इसको सिमरन करने से वो खुशी होती है; क्योंकि नाटक में तुम्हारे जैसा एक्टर्स और तो नहीं हैं ना! तुम तो ये समझते हो ना, जैसे वो ड्रामा जाके देखेंगे, तो मुख्य–2

एक्टर्स हैं जिनका नाम भी गाया जाता, कितना पैसा है उन लोगों के पास, जो गायन अच्छा गाती है, फलाना करते हैं। तो तुम तो अभी समझते हो ना, अभी तुम कोई दूसरी दुनियाँ के मनुष्यों के माफिक नहीं हो, तुम अभी बेहद के ड्रामा के बच्चे अपन को समझ गए हो। उनमें फिर समझते हो, वो हुआ हद का, उनमें अच्छे–2 एक्टर्स बहुत फर्स्टक्लास, जिनका नाम भी है, बहुत गायन और तुम इस बेहद के ड्रामा के हो; इसलिए तुमको अच्छी तरह से मालूम है कि अच्छे–2 एक्टर्स कौन हैं और अभी कैसे बन रहे हैं। तुम पुरुषार्थ (से) बन रहे हो इस दैवी घराने में पार्ट (...) और पुरुषार्थ करके ऊँच पद लेने के लिए। ये तो ठीक है ड्रामा के प्लैन अनुसार, जिनका जो पद कल्प पहले भी हुआ होगा वो ही होगा, वो ऐसे ही पुरुषार्थ करेंगे, करेंगे भी ज़रूर पुरुषार्थ; क्योंकि पुरुषार्थ बिगर कभी भी कोई मनुष्य रह नहीं सकते हैं। अगर कोई कहे कि ड्रामा हमको पुरुषार्थ कराएगा। अरे नहीं, बाप कहते हैं और सब–कोई कहते हैं कि पुरुषार्थ बिगर कोई प्रालब्ध मिलती ही नहीं है। पानी के लिए भी उठना पड़ेगा, किसको कहना पड़ेगा। तो ये भी तो पुरुषार्थ, किसको कहना– पानी ले आओ, तो पुरुषार्थ है ना! पुरुषार्थ बिगर कुछ होता ही नहीं है और ये तो तुम बच्चों ने जान लिया ड्रामा को अच्छी तरह से, बुद्धि में भी। जैसे नाटक के एक्टर्स होते हैं ना छोटे, उनके बुद्धि में होती है कि कौन–2 हमारा अच्छे–2 एक्टर्स हैं, जिनका नाम है बाला और तुम भी बच्चे अभी समझ गए कि बेहद के ड्रामा में कौन हैं अच्छे–2 एक्टर्स, जो एक्टर्स बनने ही हैं। जो पास्ट हो गए हैं अच्छे–2 एक्टर्स, जो फिर वो कम हो गए हैं, कौड़ी–जैसे हो गए हैं, वो फिर पार्ट अपना बजाय करके फिर हीरे जैसा बनेगा। तो उनका पार्ट सबसे बड़ा हुआ ना, जो कौड़ी जैसे बन करके और फिर हीरे जैसा बने हैं। उसको कहा जाएगा– भई ये तीखे–ते–तीखा पार्ट इनका है, जो ये कितना ऊँचे–ते–ऊँचा भी जाता है तो इतना नीचे–ते–नीचे भी जाता है। तुम बच्चों की बुद्धि में जैसे कि ये सारा बेहद का ड्रामा, ये मालूम भी है और फिर ये भी जानते हो कि ये पुराना नाटक हो गया है। अभी हमको फिर जा करके, फिर स्वर्ग से/सतयुग से फिरकर पार्ट अपना बजाना है और जो ड्रामा में नूँध है। पुरुषार्थ करते हो, कैसे बजाएगा भविष्य में ये अपना आदि सनातन देवी–देवता धर्म या राजधानी कैसे चलाएँगे? फिर वो समझ जाते हैं कि हाँ, जैसे कल्प–2 चलाते हैं ऐसे ही चलाएँगे। जैसे कल, जैसे ये देखो, ये भी तो राजधानियाँ चल रही हैं ना! तो ये तो समझते हो ना– कल्प–2 ये सभी राजधानियाँ फिर चलेंगी। देखो, ये भी राजधानी चलेगी, आगे राजाओं की थी, चलती है। ये–2 वो बाहर वाले राजे आए, उनके भी तो चले, रानियाँ और उनकी। तो ये बच्चे समझते हैं ना, फिर से ये नाटक फिर से रिपीट करेंगे। तो हूबहू जैसे तुम नाटक में जाते हो और फिर ये समझते हो कि हम जाएगा तो वो वो ही नाटक है, फिर वो ही एक्टर्स होगा, ये होगा, तो याद है ना! जब नाटक देख करके आते हो, तो वो तो है हद का, झट याद आ जाएगा। ये अभी बेहद का, तुमको बाप ने समझाया– तो तुमको भी ये भी झट आ जाना चाहिए। डेली बाप को याद करके बाप से वर्सा ले करके और फिर हम अपना ऊँच पद पाय करके और पार्ट बजाएँगे। है तो पार्ट, पार्ट से तो कोई छूट ही नहीं सकते हैं। ये भी समझाना देते हैं ना! बाबा जो कहते हैं लिबरेटर, तो ऐसे नहीं समझना चाहिए कि मोक्ष देने वाला। लिबरेटर है ही माना दुःख से छुड़ाने वाला; क्योंकि इस समय में सभी दुःखी हैं और सतयुग में फिर शांति भी है, सुख भी है। ये समझाना मोस्ट सिम्पुल है। वो कल तुमको कोई भी बात का (...), गीता भी पढ़ते होंगे बहुत ही, बाबा खुद भी ये गीता पढ़ता था, तो कुछ भी उनसे नहीं समझते थे। अभी बाप समझाते हैं तो समझ में आते हैं। रूहानी बाप व दादा का यादप्यार और गुडनाइट।